GEOGRAPHICAL SOCIETY OF CENTRAL HIMALAYA

Registered Under Societies Registration Act XXI of 1860
(Registration No. UK0600332021005726)
www.gsch.co.in

MEMBERSHIP FORM

Name / Name of the Institute: ……
Date of Birth and Age / Year of Establishment: …… Birth Place ……
Academic Qualification : ……
Designation : ……
Field of Interest : ……
Present Address
……
E-mail id …… Aadhar Number ……
Phone / Mobile Number:……Whatsaap No……

Nature of Membership : Student / Ordinary Fellow (5 Year Membership) / Life Time Membership/ Life Time Fellow /Indian Institutional Annual / Foreign Institutional Annual / Donor Member / Patron Member.
I wish to join The Geographical Society of Central Himalaya as a Member.

I herewith remit the membership fee through Online Banking payable to "The Geographical Society of Central Himalaya, Dehradun, Uttarakhand".
I will abide by the rules and regulations of the Society.

Date : Signature
Place:

Online Bank Account Details Bank:

Account Name: Geographical Society of Central Himalaya
Account No: 41002340916
IFSC Code SBIN0007893
Type: Current
Bank Name: State Bank of India, Dehradun

Category of Membership

Student (Annual)	**Rs.500/-**	**Ordinary Fellow (5 Year Membership)**	**Rs. 2,500/-**
Life Time Membership	**Rs. 5000/-**	**Life Time Fellow (Indian)**	**Rs. 20,500/-**
Indian Institution (Annual)	**Rs. 3000/-**	**Foreign Institution (Annual)**	**US$ 250/-**

Fill up the form and send it to us for membership at the email- pgschuki21@gmail.com
Attach Documents: Filled Form, Fee Receipt Screenshot, Highest Qualification, Aadhar Card
Contact +917455887067,+917310896083,+919058888288

सेंट्रल हिमालय की भौगोलिक संस्था (G.S.C.H) का संक्षिप्त विवरण

संस्था शुद्ध रूप से भौगोलिक दृष्टि से हिमालय क्षेत्र/ उत्तराखंड के अंतर्गत अनुशासन विषयों पर व्याख्यान,वर्कशॉप,शोध कार्य पर संगोष्ठी ऑनलाइन/ ऑफलाइन के माध्यम से शैक्षणिक /बौद्धिक संवाद के प्रति प्रतिबद्ध है ।वर्तमान में संस्था वर्ष भर में निम्न दिनो पर 25 जनवरी पर्यटक दिवस ,22 अप्रैल मध्य हिमालय दिवस 9 सितंबर हिमालय दिवस, 15 नवंबर G. I. S. Day पर संस्था द्वारा ऑनलाइन - ऑफलाइन कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिसमें 75 से 100 प्रोफेसर,वैज्ञानिक, कॉलेज के अध्यापक,शोध छात्रों, और कॉलेज के छात्र सम्मिलित होते हैं ।कार्यक्रमों के बाद फीडबैक भी लिया जाता है और उसके अनुसार प्रमाण पत्र दिए जाते हैं।

संस्था के संबंध में वेबसाइट पर विस्तृत विवरण उपलब्ध है, कतिपय महत्वपूर्ण बिंदुओं को प्रथम दृष्टि संज्ञान के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है।

(1) संस्था एकाधिकार से मुक्त है / रहेगी ।पदाधिकारीयों के लिए संस्था के उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्धता -योग्यता प्रमुख अहर्ता है।भ्रष्टाचार का कोई स्थान नहीं है।

(2) कोई भी सदस्य फेलो संस्था के उद्देश्यों के अनुरूप कार्यक्रम को अपना कर उसकी प्रस्तुति संस्था के मंच से कर सकता है, जिसमें कार्यकारिणी का भरपूर सहयोग रहता है।कार्यक्रम की गुणवत्ता में समझौता नहीं किया जा सकता है, अर्थात मुख्य वक्ता का चयन सावधानी पूर्वक होता है।

(3) संस्था के कार्यक्रमों में वरिष्ठ तथा युवाओं को समान अवसर प्राप्त है ।दिनांक 25 जनवरी के पर्यटन दिवस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रोफेसर वी.पी.सती मिजोरम विश्वविद्यालय (50 देश से अधिक में शैक्षणिक उपस्थिति देने वाले) रहे हैं। वहीं राजकीय महाविद्यालय हरिद्वार में कार्यरत डॉक्टर किरन त्रिपाठी द्वारा केस स्टडी प्रस्तुत की गई।

(4) हिमालय में पर्यावरण- प्राकृति, सांस्कृतिक,आर्थिक,संबंधित अध्ययन विषयों की आतिशय विलुप्तता है आप अपनी रुचि के अनुरूप विषय क्षेत्र का चुनाव करें प्राथमिक कार्य करें उसमें संबंधित सहयोग के लिए संस्था से सहयोग प्राप्त होगा,आपके कार्य को भी प्रस्तुति करने का अवसर संस्था प्रधान करेगी।

(5) आप इस विषय पर ध्यान दें की गढ़वाल-कुमाऊं विश्वविद्यालय के 5 दशकों के कार्यकाल के पश्चात उत्तराखंड राज्य में इस प्रकार की भौगोलिक संस्था की प्रासंगीता बनती है,क्योंकि बढ़ते हुए शिक्षा के साथ बौद्धिक संवाद के लिए एक मंच की आवश्यकता होती है,यदि आप इससे सहमत हैं तो संस्था में भागीदारी सुनिश्चित कीजिए।यह भी विचारणीय है की उपादेयता की दृष्टि से ऑनलाइन गोष्ठी कार्यक्रम संवाद के अधिक अवसर प्रदान करता है साथ ही ऑनलाइन-ऑफलाइन कार्यक्रम निर्विवाद रूप श्रेष्ठ हैं ।

संस्था के गठन के लिए निष्ठापूर्ण सहयोगी एवं संघर्षवान व्यक्तियों की आवश्यकता होती है । वर्तमान सभी सदस्य इस संस्था मे मुक्त हृदय से योगदान दिया और कर रहे हैं। धीरे-धीरे संस्था की कार्यशैली विकसित हो रही है मौलिकता समावेश दृश्यमान है, अपनी अंतरात्मा से विचार करें कि अभी तक संस्था की भूमिका सकारात्मक है कि नहीं और उसी के अनुरूप सोसाइटी में सहयोग का निर्णय करें। यह समिति अचानक नहीं बनी इस पर पिछले दो दशक से मंथन चल रहा था।